जमवारामगढ़ तहसील (जयपुर) का भौगोलिक पर्यावरण

*डॉ. पी.एल. गुप्ता

भूगर्भिक संरचना

परती भूमि व भूगर्भिक संरचना में गहरा अर्न्तसम्बन्ध है। इस तहसील में दिल्ली समूह चट्टानों की प्रधानता पायी जाती है। कुछ स्थानों पर विशेष तौर पर नदी बेसिनों में क्वार्टरनरी अवसादी चट्टाने भी मिलती है।

तहसील के भूगर्भिक संरचना के अध्ययन को सरल व सुगम बनाने की दृष्टि से मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया गया है।

1. दिल्ली सुपर समूह
2. नवीन क्षेत्र

1. दिल्ली सुपर समूह :

दिल्ली सुपर समूह को पुनः दो भागों में विभाजित किया गया है :–

अ. अलवर समूहः इस तहसील के लगभग आधे भाग पर अलवर समूह की चट्टाने तीन लम्बवत क्षेत्र में उत्तर से दक्षिण में फैली हुई है (मानचित्र संख्या 2:1)। इन शैलों में जैविक तत्वों की प्रधानता पायी जाती है।

ब. रायलो समूहः रायलो समूह के तीन छोटे–छोटे क्षेत्र तहसील के उत्तरी पूर्वी व मध्यवर्ती भाग में पाये जाते हैं (मानचित्र, संख्या 2:1)। इसमें डोलोमाइट, संगमरमर और क्वार्टजाइट के अपक्षय भण्डार पाये जाते हैं।

2. नवीन क्षेत्र :

बाढकृत निक्षेप मुख्यतः तहसील के वर्तमान नदी व छोटे–बड़े नालों के तटों पर एक सकड़ी पट्टी के रूप में पाये जाते हैं। नदी तटों पर जल अपक्षय एवं निक्षेपण द्वारा मुख्यतः रेत, छोटे–छोटे कंकड़, चमकीले एवं गोलाकार पथरीले टुकड़ों का निर्माण उत्तर से दक्षिण की ओर लम्बी पट्टी के रूप में पाया जाता है (मानचित्र संख्या 2:1)।

मुख्य खनिज

इस तहसील में ताम्बा, लोह–अयस्क, घीया पत्थर, बलुआ पत्थर, चूना पत्थर एवं अन्य प्रकार के खनिज पदार्थों के क्षेत्र पाये जाते हैं।

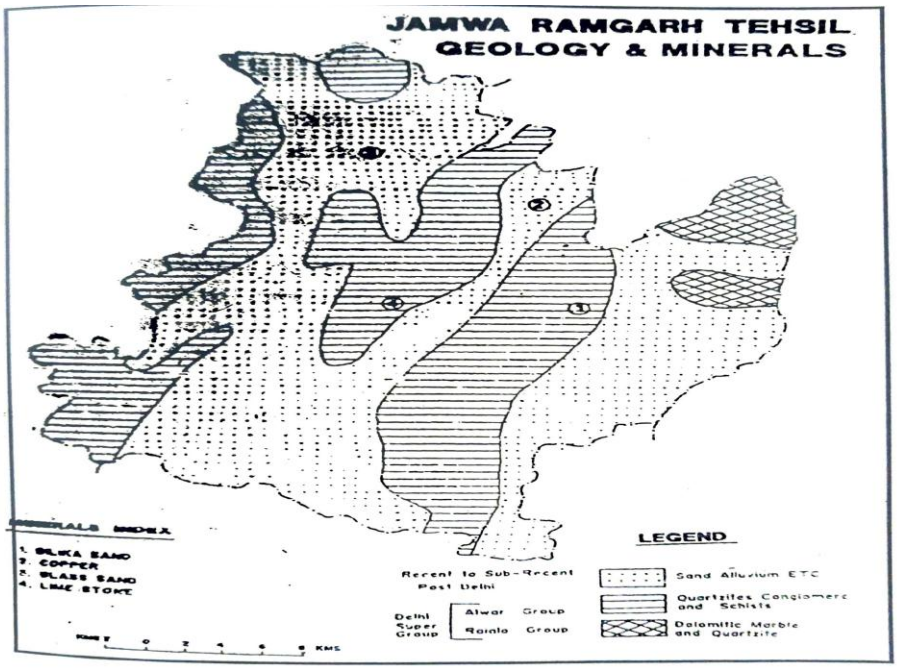
JAMWA RAMGARH TEHSIL
GEOLOGY & MINERALS
LEGEND
Recent to Sub-Recent
Post Delhi
Sand Alluvium ETC
Quartzites Conglomerc and Schists
Delhi Super Group
Alwar Group
Raisla Group
Dolomitic Marble and Quartzite

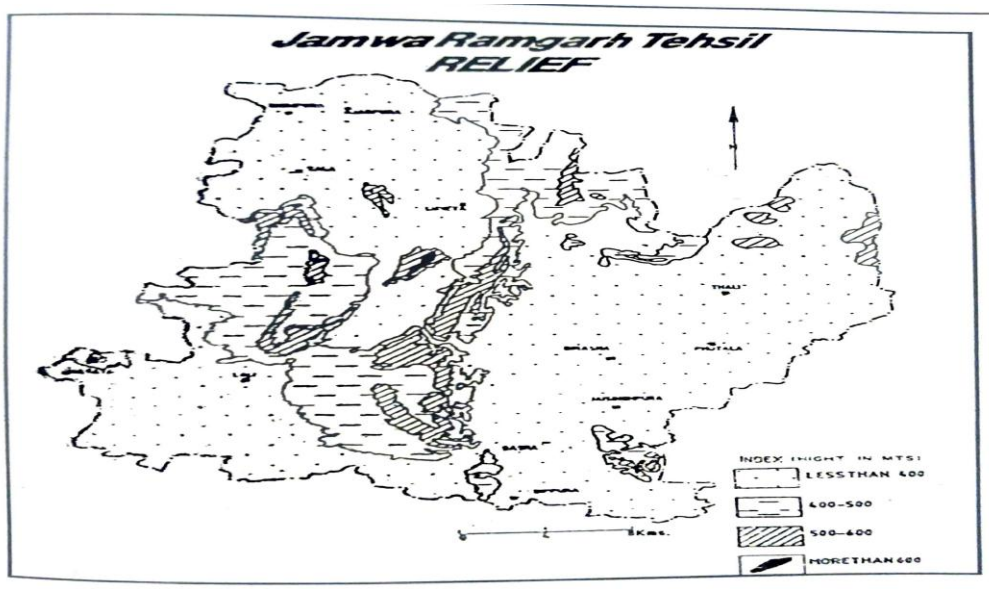
Jamwa Ramgarh Tehsil
RELIEF
INDEX (HIGHT IN MTS)
LESSTHAN 400
400-500
500-600
MORETHAN 600

उच्चावच

उच्चावच की दृष्टि से जमवारामगढ़ तहसील को निम्न दो प्रमुख वर्गों में विभाजित कर सकते हैः–

1. निम्न भूमि (समुद्र तल से 380 मीटर से 500 मीटर)
2. उच्च भूमि :–
   - अ. पहाड़ी भूमि (500 मीटर से ऊपर)
   - ब. पहाड़ियों के अतिरिक्त अन्य उच्च भूमि

यह तहसील जयपुर के उत्तर–पूर्व निम्न भाग का ही एक हिस्सा है, जिसमें कटी–फटी पहाड़ियां, नदी, घाटिका, नाले और रेत के टीले पाये जाते है (मानचित्र संख्या 2:2)। इस तहसील की समुद्र तल से ऊँचाई 380 मीटर से 500 मीटर है।

अपवाह तंत्र :

इस तहसील में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियां बाणगंगा, ढूण्ड नदी, जटवाड़ा नदी एवं ताला नदी है। साथ ही. कुछ नाले भी मौजूद हैं, इनमें गुमटी का नाला, बिडाला नाला, रोरा नाला, बीडिया नाला, धापुरा नाला आदि प्रमुख हैं (मानचित्र संख्या 2:3)।

तालाब :

इस तहसील में तालाबों की संख्या 10 है। इन तालाबों में सर्वाधिक सिंचाई क्षमता जमवारामगढ़ बाँध (20,830) की है। इस तहसील का दूसरा महत्वपूर्ण तालाब खरड़ का है, जिसकी सिंचाई क्षमता 2700 एकड़ है। सिंचाई की दृष्टि से महत्वपूर्ण तीसरा तालाब सैंथल बाँध है, जो तहसील के पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी सिंचाई क्षमता 2,000 एकड़ है। तहसील में स्थित अन्य छोटे तालाबों की सिंचाई क्षमता 63 से 590 एकड़ तक की है।

भूमिगत जल की गहराई :

जमवारामगढ़ तहसील में भूमिगत जल की गहराई में वृद्धि होती जा रही है। नीचे तालिका में इस तहसील के विभिन्न क्षेत्रों के गांवों में सन् 2000 व 2003 का मानसून से पूर्व एवं पश्चात् का भूमिगत जल की गहराई एवं प्रत्येक क्षेत्र का औसत दर्शाया गया है :–

मिट्टियाँ :

पृथ्वी की ऊपरी सतह पर पायी जाने वाली मिट्टी अमूल्य सम्पदा है, जिस पर किसी भी क्षेत्र की समृद्धि एवं उत्पादक तथा आर्थिक विकास निर्भर करता है। इस तहसील में परती भूमि का अध्ययन करने के लिये इस तहसील की मिट्टियों की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

अमेरिकी मिट्टी विशेषज्ञ डॉ. बैनेट के अनुसार "मिट्टी भू–पृष्ट पर मिलने वाली असंगठित पदार्थो की वह ऊपरी परत है, जो मूल चट्टानों अथवा वनस्पति के योग से बनती है। जमवारामगढ़ तहसील की मिट्टियों को निम्न 6 समूहों में विभाजित किया गया है (मानचित्र संख्या 2:)।

1. नरेना – दूदू एसोसियेशन (Naraina - Dudu Association)

2. चन्द्राणा – पड़ासोली एसोसियेशन (Chandrana - Padsoli Association)
3. बस्सी – रोजड़ी श्रेणी (Bassi - Rojwari Association)
4. चन्द्राणा – बाँदीकुई एसोसियेशन (Chandrana - Bandikui Association)
5. अत्यधिक अवनालित एवं अपरदित मिट्टि (Gullied Area)
6. पहाड़ी मिट्टियाँ (Hilly Soils)

इस तहसील की मिट्टियों मे नत्रजन की मात्रा की अत्यधिक कमी पायी जाती है, जबकी फास्फोंरस उच्च तथा पोटेशियम मध्यम उच्च मात्रा में पाया जाता है।

जलवायु :

मौसम की सामान्य औसत दशाओं को जलवायु कहा जाता है। जलवायु के अन्तर्गत तापमान, वर्षा, वायुदाब, वायु की आर्द्रता, वायु की गति, धूल भरी आंधियां आदि अनेक मौसमिक तत्वों का अध्ययन किया जाता है। ये जलवायु के तत्व स्थान विशेष की स्थिति धरातलीय स्वरूप प्रचलित पवन, अक्षांश, समुद्र तल से दूरी, जलीय उपस्थिति, ऊँचाई, तूफानों एवं महाद्वीपीयता आदि से प्रभावित होते है।

जलवायु परती भूमि के निर्माण एवं वितरण को भी अत्यधिक प्रभावित करती है, जैसे वर्षा की तीव्रता के फलस्वरूप पहाड़ी क्षेत्रों पर अवनालिकायें निर्मित हो जाती है तथा मैदानी क्षेत्रों की उपजाऊ मिट्टि बहकर चली जाती है। इस तहसील के 23.01 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र पर परती भूमि पायी जाती है।

निम्न तालिका में इस तहसील की प्रत्येक महीने का औसत तापमान, वर्षा, सापेक्षित आर्द्रता, वायु की गति तथा धूल भरी आंधियों सम्बन्धी जानकारी दी गई है :–

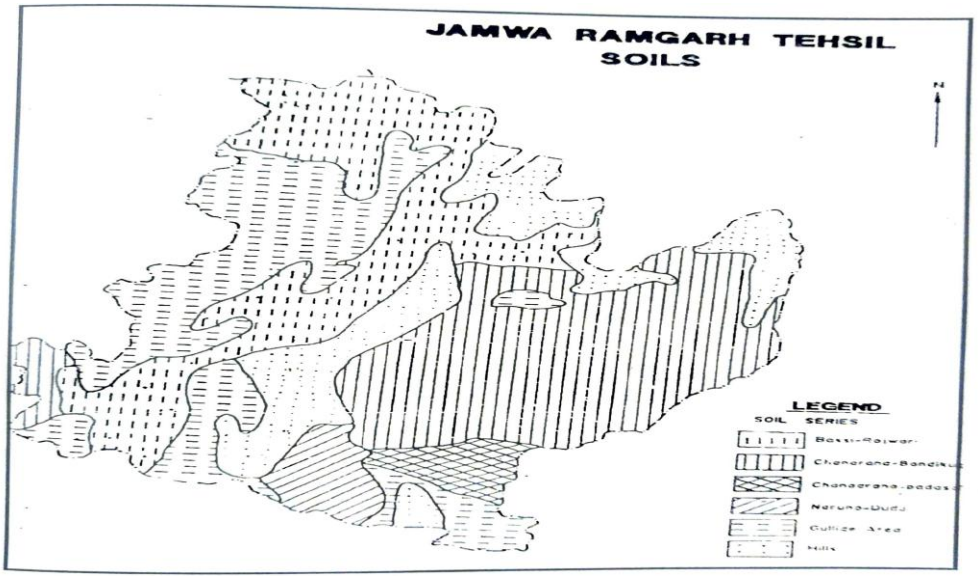

तालिका संख्या 2 :
जमवारामगढ़ तहसील की जलवायु की दशाऐं

महीना	औसत तापमान	औसत वर्षा (मिमी में)	सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत में)	वायु गति (प्रति घण्टा)	धूल भरी आंधियाँ
जनवरी	15.15	18.00	47.50	11.00	1.70
फरवरी	18.05	1.70	38.50	11.50	1.40
मार्च	23.20	4.80	30.00	12.00	2.00
अप्रेल	28.′75	2.50	23.50	13.10	3.00
मई	33.20	6.60	26.00	16.50	5.00
जून	33.25	67.10	40.00	17.80	9.00
जुलाई	29.85	182.90	68.50	16.20	9.00
अगस्त	28.10	188.60	76.50	12.40	9.00
सितम्बर	28.10	87.40	65.′50	12.30	6.00
अक्टूबर	25.75	2.30	41.50	10.00	1.90
नवम्बर	20.50	0.80	39.00	7.60	0.50
दिसम्बर	16.75	5.60	45.50	8.10	0.50

स्रोतः मौसम कार्यालय, जयपुर।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जमवारामगढ़ तहसील में जून का महिना सबसे गर्म रहा है। वर्ष का न्यूनतम तापमान जनवरी माह का रहता है। जनवरी के महिने के उपरान्त तहसील के तापमान में वृद्धि होने लगती है।

सिंचाई :

किसानों द्वारा वर्षा के अभाव में फसलों को जल पिलाने की क्रिया को सिंचाई कहा जाता है। कृषि विकास के लिये सिंचाई अपरिहार्य है। जमवारामगढ़ तहसील में सिंचाई का मुख्य स्रोत भूमिगत जल है। हालांकि जमवारामगढ़ बाँध की नहरें भी है, जो वर्तमान में सिंचाई के उपयोंग में नही ली जाती है। इस तहसील में 50.52 प्रतिशत क्षेत्र सिंचित

है। सर्वाधित सिंचित क्षेत (68 प्रतिशत से अधिक) तहसील के विभिन्न क्षेत्रों में फैला हुआ है, लेकिन सर्वाधित केन्द्रीकरण तहसील के उत्तरी पश्चिमी भाग में है, जहाँ भूमिगत जल की गहराई 23 मीटर से 29 मीटर है।

सिंचित क्षेत्र में वृद्धि के लिए छोटे–छोटे नालों पर एनीकट बाँधों का निर्माण व कृषि अयोग्य परती भूमि तथा वृक्षविहीन पहाड़ियों पर वृक्षारोपण की अति आवश्यकता है, जिससे भूमिगत जल स्तर ऊँचा उठ सके। भूमिगत जल की मात्रा बनाये रखने के लिये बरसात के समुचित पानी का एकत्रीकरण कर भूमि में पुनः प्रवेश (Leave) कराया जाना आवश्यक है, साथ ही पुराने कूपों को भी पुनः चार्ज किये जाने की दिशा में कार्य किया जाना चाहिए। समय–समय पर शस्य क्रियाओं के अन्तर्गत खरपतवारों का नाश कर तथा भूजक वाष्पीकरण के द्वारा होने वाले पानी के नुकसान के लिये mulch का प्रयोग किया जाना भी सार्थक रहेगा। इसके साथ–साथ कम समय में पकने वाली तथा कम जल मांग वाली फसलों को अपनाकर भी उत्पादक बढ़ाया जा सकता है। इस तहसील में सिंचित क्षेत्र में विस्तार करके पुरातन पड़त को काफी कम किया जा सकता है।

जनसंख्या :

किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास उस क्षेत्र के मानव संसाधन पर निर्भर करता है। मानव ही प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करता है। उस उपयोग मानव शक्ति पर ही आधारित होता है। वास्तव में प्राकृतिक साधन निष्क्रिय होते है। ये केवल आर्थिक विकास की सुविधा मात्र प्रदान करते है। जबकि मानव का कार्य उनसे अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है।

जमवारामगढ़ की कुल जनसंख्या 2,50,132 है। कुल जनसंख्या में 1,31,112 पुरूष तथा 1,19,020 स्त्रियाँ है। तहसील की कुल जनसंख्या का घनत्व ..... व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इस तहसील में सारी जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों मे पायी जाती है।

साक्षरता :

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार इस तहसील में साक्षरता 62.87 प्रतिशत है। जबकि जिला स्तर पर 70.63 प्रतिशत एवं राज्य स्तर पर साक्षरता 61.03 प्रतिशत है। इस प्रकार यह तहसील साक्षरता की दृष्टि से जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर से 7.76 प्रतिशत कम है। इस तहसील की पूरी जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों से आती है, जिसकी साक्षरता 62.87 प्रतिशत है।

यातायात :

सील के आर्थिक विकास के लिये परिवहन के साधन बड़े महत्वपूर्ण होते है। आधुनिक समय मे परिवहन के साधनों के विस्तार को आर्थिक समृद्धि का सूचक माना जाता है। तहसील की कृषि प्रधान अर्थ व्यवस्था में परिवहन के साधन एक प्राथमिक आवश्यकता के रूप में महत्व रखते है। तहसील में केवल सड़क मार्ग की ही सुविधा उपलब्ध है, किन्तु तहसील की विशालता को देखते हुए सड़क मार्गो की लम्बाई बहुत की कम है। अतः तहसील के आर्थिक, सामाजिक एवं सर्वागीण विकास के लिये सड़क मार्गो के और विकास की आवश्यकता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

तहसील के गाँव भानपुर कलां के पश्चिमी भाग से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 (जयपुर – दिल्ली) गुजरता है। तहसील के उत्तरी क्षेत्र का मुख्य गांव गठवाडी मे होकर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 व दक्षिण पूर्व की दिशा दौसा मे जाने के लिये सन् 2010 तक बनकर तैयार हो जायेगा, जिससे यह तहसील दौसा, आगरा व भरतपुर से जुड

जायेगी। तहसील के कच्चे व पक्के दानों प्रकार के सड़क मार्ग मौजूद है।

यातायात के साधनों कें बस, ट्रक और जीप प्रमुख है। ग्रामीण क्षेत्रों के बैलगाडी, ऊँटगाड़ी का उपयोग अधिक किया जाता है। इस प्रकार तहसील से दुग्ध एवं साग सब्जी जयपुर शहर को प्रतिदिन पहुँचाई जाती है।

***सह आचार्य**
भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय,
कालाडेरा, जयपुर (राज.)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Bhalla, L.R. (1985), Geography of Rajasthan, Kuldeep Publication, Ajmer.
2. Bhall, G.S. and Alga, Y.K. (1979), Performance of Indian Agriculature : A Case districtwise study, Sterling Pub. Private Ltd., Delhi
3. Bhatti, I.Z. (1982) "Impact of Rajasthan Canal Project on Social Economic and Environmental Conditions", National Council of Applied Economic Research, Delhi.
4. Champion H.C. and Seth, S.K. (1962): A Revised Survey of the Forest types of India, Govt. Publication, New Delhi.
5. Chouhan, T.S. (1987): Agricultural geography- A case study of Rajasthan State, Acadmic Publishers Jaipur
6. Coppey, Joseph D. (1967) 'Impact of Technology on Traditional Agriculture: The Peru case Journal of farm Economics, 49, No. 2 ; 450-60.
7. Donde W.B. 1969, 'smaller farmlands can yields more. World food problems No. 8, Rome F.A.O.
8. Donde W.B. 1969, "Tractors in Indian Agriculture Situation in India 24, No. 5 : 391-95.